

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५१७२ (१७२)

ग्रंथ नाम

पट पूर्व लक्षणे.

नाम माहिमा.

विषय

मराठी काव्य.

क्र. नं. ४२

५९६।५९७२ सराठी

✓ काठ

उक्तार्थार्थ. २ समसहिमं
साफ



श्रीपाश्रोत्रीयाचतुर्ना॥५॥

हिपरिसिद्धि॥१४॥ मागतीया

आंणीनेदांतीया॥ मांशईद्यका

उपेक्षीतया॥ सफाग्याआणी

नीलजीनीया॥ मैनी॥१५॥ र

तरतचिपे॥ मंत्रभुपा

चाभुपती॥ ये॥ कृतासमर

संध्रुति॥ लवण॥ लक्रीनेमीला॥१६॥

उसील्लशानवेभव॥ समांन

गिसुहृदभाव॥ सखापार्थी

श्रिवः भणगाभणगसा

॥१७॥ मनुशालीकीजन्म

राजनां न के भोग ये भोग तं ना
 ये से मा सीया मना ॥ वीचा
 मानले ॥ १ ॥ दरिद्र धा
 क देखत न येनी ॥ परिते डोक
 स ये के गुणी ॥ सुमीत्र कुमीत्राणि
 नांणीः पारखु जाणे नीवाडो ॥ १ ॥
 बाळवाळ ना भरिलं जळे पासु
 जलतु वापि ई ॥ छलि पंढो ॥ आ
 जीवन सताई दया के गप्पाति
 हरिजे दिन ॥ १ ॥ गुणा मा



न के दाय गुं ॥ रा मा मि तो
 हि निरे मण ॥ ग्रह मंडल के सह
 श्री कींणी ॥ सीया मा जी तुं ने सा ॥ २ ॥
 श्रेय मे ज धृती दया ता ॥ तुं स तां प
 रते नामा गुता ॥ उदार भा व रस्य
 सता ॥ तो ये क उल मक्षेत्री या
 ॥ २ ॥ कलि बत निर ते ज आ धी र्य
 ॥ ३ ॥ पंढा ये ना धिया गका
 पणं य ई स्य रिषा वी स्य
 धं मक्षेत्री जाणा वा
 रेन पाचारिता येणे

नां बहू बोलि जे ॥ सा
 तशा हाणे ॥ शोहा
 म्हाणा ति ॥ २४ ॥ कार
 वाट वीक्षे शुभ ॥ येस्य यनि
 जता म्हाणे मी ॥ इशु ॥ पुर ॥ चामा
 तीषा धमपु ॥ २५ ॥ येसे शा ने
 बोल ति ॥ २६ ॥ शुभ पाळ न दि
 सा धु ॥ सायान की जे मुळ शोधु ॥
 मुंखे बोलता नी ॥ दानु वादु ॥ का
 ण प्रसव पावळा ॥ २७ ॥ दुपद
 म्हाणे ॥ शेणा चामा ॥ करणे नव
 मे ये ॥ येणा ॥ २८ ॥ रिषा

थवाज येस्य ॥ पुर ॥ सापावे
 प्रारब्ध ॥ २९ ॥ सा ॥ कला ॥ मकाळे
 हांणी ॥ याचा वीशादका येसाम
 नी ॥ तोशका भेपरदुशणि ॥ ३० ॥ ची
 लन धंढी जाण सा ॥ ३१ ॥ सहज ई
 ने मान से ॥ तेथी बोलवठे दैवें
 वीरु शे ॥ तरी तेने धोना बडे ये
 की ॥ म्हाणे ॥ कोण सांग पा ॥ ३२ ॥
 अस्व ॥ त्या मोती सिधातु ॥ दु
 हुर ॥ त्या संप्रदाये पथा ॥ दुस्य
 ॥ ३३ ॥ विचार दिना ॥ ३४ ॥

जयाचेंकरिंगो॥११॥ओलाव
 दशुनपणो॥वगयुतासेषा
 पुणो॥वाचाकपणांचेमीगु
 नो॥१२॥दोडाटेवीपुढील
 का॥तेंचीस्ययेथापणापांगसि॥
 येसेनकळेजयासिनायेका॥
 १३॥आभ्यासस्येनीगुणो॥
 सकळवीक्ष्याजाणो॥जना
 सेनीवउनेणे॥नोयेका॥१४॥
 हस्तीबांधजेउणेतनो॥वे
 लोभेभयभयरातेःयेसा
 जोप्रपंची॥१५॥तार्येका॥

५५
 रक्षापारवती॥सर्पसिना
 हिंमरुदसाप्याप्रासिनंदि
 गोस्सा॥शत्रुसिनोस्त्रिह
 स्याहंनोधारिजाणपा॥१६॥
 मार्गनाच्छरक्यक्षुहिना॥नकळे
 दिशावेउतिकावणाआधिय
 पुरशातंकळयाण॥उभयेलो
 कीनदेखो॥१७॥अस्त्रजाणती
 अस्त्रवुणा॥हंदइषासतांमि
 ह्युस्मास्मरुणाआपायेका॥१८॥
 संकटहरणा॥उपायरचेआप
 सा॥१९॥संकटक्षमावीस्म

रमरण ॥ सासित कोळ गुनुद
 टीनी गुनुद टीने सभा धांना
 आप हावाट संपदा ॥ ७ ॥
 हांभी कभज नाचा पसाना ॥ ८ ॥
 दरउप जवीनारिन नांग्यांत
 जीम हा दोरा त्या थाणांतो ये
 कलाणे इत्युता ॥ ९ ॥ जेवोम
 दाचा पवीत्राचार ॥ प्रगट हि
 सेषानि सुंदरा ॥ कां वैराचामु
 रकशुंगार ॥ भुवि पाहे कां माक



वचन ना ॥ १० ॥ गुळ गुळ
 सप्यागांची मवाळे ॥ खरिहा
 गारची सोडवोळे ॥ रत्न माळा
 नासा ॥ ११ ॥ व्याध दया सिद्ध
 लोकी ॥ धेनु फुरवाळी निजन
 र्वा ॥ फणा ग्रीवा उनी पोतुई
 की ॥ सपरिवळवी मंडकाले ॥
 येका वार्ध येका पांरि ॥ ना हा दे मवे
 जे प्रत्ये हि सिद्ध ॥ येअ सुळा की म्ये
 येना ह्मिटा ॥ कांण व्यास इति रत्नास

२५ (७)
 नेपेणन्मवरिप्रातपाविले ॥ दिव्य
 मंत्रातेउपेदसिले ॥ संकटिप्राण
 तेरशिले ॥ पाणिपासिले दुर्भ
 शी ॥ ८० ॥ जळताना गिले वस्था
 नरि ॥ बुडतां तारिले महापुरि ॥
 साने वीसरे तो पाधोरि ॥ न
 रकीपडे दुचा लागे ॥ ८१ ॥ छन
 धुदोशें दोश भरि ना पापुल्य ॥
 कोटि फुकासहेता जंवरिल पा
 तीचंद्रादि सानं वरिल पर
 करं वि ॥ ८२ ॥ विनीत म



प्राणिपात ॥ थलेश्वर गु
 णिपायाला गिमान्य सर्वा तो
 ससपाणी सहनसिला ॥ तेणे जी
 कीले वीस्य सकळा ॥ येसिये गुणी
 सर्व फुलाळामु पुनी वंद्य वीर्या
 ते ॥ ८४ ॥ सर्व भुतिसमानद
 घा ॥ निज रन मरकारितिलया
 येसिये गुणी भूशालकाया ॥
 पुनी प्रीये देवाता ॥ ८८ ॥ जेवले
 तेवहुल वरवे ॥ अयमनि लेमा
 सोये जीवें ॥ दिनं सकटि रक्षावे
 ७४
 व्याख्या ॥ खंडे मा गिले वीश

दंडकीने हृदये लोप ८८ ॥ जया

पात्रोपग्रमहादमा किरा ह्रपा

वेसवीसुरेन्द्रमोकोपरिधोस्ति

धीपायेधुकिामाविरकाने

सर्वदा ॥ ८९ ॥ कुञ्चितपुरेशो

उददेशु ॥ करिनां विदेश हो

इतिनाशु ॥ धालुपा होनीयां

परिसु ॥ स्पर्शकरिगतेजाण

लो ॥ ९० ॥ वोकरवानीयां मनाक

मगवा ॥ ९१ ॥ ॥ तुज

सांगणे ॥ ९२ ॥ ॥ वचनवंव

दानीमाया ॥ ९३ ॥ ॥ तज्यणां

चक्रांतः ॥ गुरपसिसव्याधोक्

माता ॥ वेदशांश्चिबो लिजे ॥ ९४

सदगुरालिकाविष्णुभंन ॥ स्मर

णेंतारिसंसापानु ॥ ९५ ॥ ॥

नोनीआधाना ॥ मुक्तस्परव्या

नुवादे ॥ ९६ ॥ ॥ स्तुतीना ॥ सिलमा

गीलनिदां ॥ मैत्रीवेनोदी ॥ ९७

वीशादक्रोधा ॥ जेवीषा ॥ ९८ ॥ ॥

व्याव्याधा ॥ ९९ ॥ ॥ गिलवीशा

एकत्र मरणं उरं तेणेति रवी
 जेष्ठमं ॥ १॥ मोह्यांगिकादि
 तानी धना आसंधातबोले
 जे ॥ ६८ ॥ संकटवोडवल्यादातुं
 ॥ श्रेष्ठा सिचजा वेंडारण ॥ नीत्य
 सेवीतां ज धनया ॥ यठां च न श्रेष्ठा
 ते ॥ ६९ ॥ जं वषापां ये स्पृशेन की
 जे ॥ तं वचिचीतां ये ती सिचजे ॥
 व्यानथषादहल्या होइजे ॥ महा
 मेतु धैय्या ॥ ७० ॥ सांपरुम्या
 वंहीचकी ॥ ते ॥ बुडतां माहा



समुद्रिं ॥ येक ॥ ७१ ॥ नृप
 नानाश्रीतां मासिजे ॥ ७२ ॥ नृप
 वधीतां बकाकारि ॥ वीजनी प्रा
 णधेतत्त्वोरि ॥ रोगेष्वाडवील्या
 देशांतरी ॥ द्रव्यहिंन येकळा ॥ ७३
 मुरवेन भाशीत कतुणां ॥ धैर्यदे
 हेवोपिमरणां ॥ तेष्वाक्ष इस्वर्ग
 भुवना ॥ पोवजे सायया ॥ ७४ ॥
 पुर्वपुण्यष्वा सल्यागां हि ॥ इस्व
 रगुनुचे ह्युपाद्रिस्ति ॥ प्रचये
 होतां सक्नुस्ति ॥ तेथे वाचति

सभाग्या ॥ ७४ ॥ महापर्विंबुड
 तानौका ॥ तेथे गेहवांकर रक्षीये
 का ॥ ब्रह्मांडमक्षीतांपावका ॥
 तेथे गेहवांचवीथेकाता ॥ ७५ ॥
 दुकाळेवांचविद्रव्यगेहना ॥ रा
 श्रमांगिरु रतिप्राणा ॥ तेसेवी
 पगेतजा तिथ्याज्जाणा ॥ पुढति
 भेटांमागुंता ॥ ७६ ॥ येकाज्ज
 नादनाशरणः करितानाम
 नांमस्मरण ॥ नगवस्रासे
 जालोसजाणा ॥ हेमगेहमा

(11A)
 ननामस्मरण ॥ नामापांसी
 नीस सुतिमुत्ती ॥ नामापांसी
 येराकीर्ति ॥ नामापासिवीज
 येप्राप्ति ॥ कर्मनीर्मुक्तिः ॥ हे
 रिनामे ॥ ७७ ॥ नामापासि
 नीसव्रति ॥ नामापांसीनीस
 शांतिः ॥ नामवणीजेसवस्मि
 ती ॥ ब्रह्मप्रासिद्धिरनामो ॥ ७८ ॥
 येकाज्जनादनाशरण ॥
 नामेपापिपरमपावन
 नामेप्रपंचब्रह्मपुंजि ॥

नाम लेखना परब्रह्म

॥८०॥ बांहा ग थो ब्रह्म
कांदि ॥ केल्या वेग के हो नना
हि ॥ करं द्या सा व धपाहि ॥

स देव हो सि ॥ १ ॥ व्याले रिना

हि सा व धानला ॥ ये लटा के

ना पुरता ॥ सुख से तो शा

चिवाती ॥ लेथे कै जे ॥ २ ॥ हु

जुं नो आ क स म सावा ॥ ये

न साक्ष पे जो डावा ॥ दुश्चिंत

पणांचा मोडावा ॥ आराब के

॥ १० ॥ श्रं न गं देव तीर्चना ॥

ये का ग क ॥ ११ ॥ ॥ ॥

हरि के थो नी ॥ ग के ले पाहि

जे ॥ आशिरि पना पकारि लावा

वां बहुतां सिकायी सियावां ॥ उ

गं पडाची नें दावां ॥ कोण हा ये

काचो ॥ ५ ॥ आउले जा क स लेज

गावां ॥ ये या शक्त्या का मा सय

वां ॥ मुदवचने बोळत जावां ॥

प्राणिमात्रां सि ॥ ६ ॥ दुसऱ्या

चया दुखें दुखवावां ॥ परसंत

शें सुखी व्हावां ॥ प्राणिमात्रां

सीमीळ उनी द्यावां ॥ बऱ्या श

ब्दे ॥ ७ ॥ बहुताचे पान्याये

समावा ॥ बहुताचे कार्य गाग

श्रीरामदासस्यामी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कनावे॥ आ॥ पुण्यापरिसर्व
वेंपारिरवेंजन॥ दुसऱ्याच
आंत रज्जगावे॥ लदनूसार
वर्तवें॥ लोकांसीपरिक्षील
जावें॥ नांनापरि॥ १॥ नेमक
चीबोलतजा॥ ताकाकृपि

(13A) प्रतीवचन॥ कदापिना
गासेनयावें॥ शमानुपें॥ १०॥
ब्याहसषावध्यायेदवडावा॥
मेतउदंडयेकमावा॥ देशम
धेरनकनावा॥ कोणीयेकाचा
१११॥ उलमण्पदार्थदुसऱ्यास
दयावा॥ शब्दनीवडनीबोळा
वा॥ सावधपणेंकरिलजावा॥
संसारव्यापुला॥ १२॥ मरणंत्ये
स्मरणव्यासावें॥ हरिभक्ती
सिसादरव्हावें॥ मनांनीकी
नीसिउरवावें॥ नानाप्रकारें
१३॥ नेमकपणेंवर्तिलीगला

गो ब हु ता सी क को आ का ।
 स व आ र्ज वी त या ला का ये
 उ णे ॥ १४ ॥ ये स उ त म गु ण
 वी र श म त या सि च भू णा
 वे पु रु श ज या चे ग ज ने ण
 गा दि श ॥ त्रु ल हा ये ॥ १५ ॥
 स्यं ये षा पं णा करि त्त जा वी ब हु
 तां चे सा रि त्त जा वी ॥ सी ज ने
 की र्ति सी उ र वां वी ॥ ना ना प्र
 का रे ॥ १६ ॥ की र्ति पा हा तां स
 र व ना दि सु र व पा हा ता की र्ति
 ना दि ॥ वी चारें वी णा का र्ति च
 नां हि स म ॥ १७ ॥ अं पु



ल या पु रु श ज ने वी ॥ बु ब हु
 ता सि सु रि क ना वां ॥ प चं ल क
 रि करि त्त जा वी ॥ दि ना क्ष रि
 क्रो या ॥ १८ ॥ दं स द र्प आ सी
 माने ॥ क्रो धे आ णी क ठी ण
 व व ने ॥ हे आ ज्ञा न त्वी ल क्ष णे
 क र्ग वै व त गी ते त वी ली ले ॥ १९ ॥
 क्रि ये जो उ त म गु णे शो फ ला ॥
 तो वी पु रु ष मा हा भ ला ॥ की
 ते लो क त या ला शो धी न फी र
 ती ॥ २० ॥ क्री ये वी णा श द्ब श
 न ॥ ते वी र वा ना वै व म न ॥ २१ ॥
 ले ते धे आ व लो क न ॥ क दा पी न करी

(15)
 नी ॥ २७ ॥ मनापासनी भक्तिकरणे
 उलमगुण आगे त्वधरणे ॥ मया
 माहा पुषा कारणे धुजी न येती २२
 बहवाभि गाडले यकलाय सेने
 वाचुनी कोण पुरवला ॥ या का
 रणे बहलां ला ॥ जाजि नारवा
 वे ॥ २७ ॥ जो सुची भुन भुध
 मती ॥ ईस्वर भावनां सर्वे भुन
 ॥ तो सर्वदा वसती थी ॥ तीर्थ
 वसती सा संगी ॥ १ ॥ तीर्थी व
 सता तीर्थ वारि ॥ सतुनी स्म
 नी सुनी देसि ॥ तीर्थी वसता
 पुण्य लेखा ॥ तीर्थी येका ने
 दिती ॥ २ ॥ गुरु हिंसा
 पुण्य लेखा ॥ ३ ॥ मज्जनमा
 गांचा उपद्रव हास ॥ तीर्थी सा
 चा धेती त्रासा ॥ नीकट द्दश
 सा करिती ॥ ४ ॥ काम क्रोध लो
 भ त्रया ॥ स्पर्श निकरि जया पि
 काया ॥ तो तीर्थ वा सिज्जां
 जाया ॥ तीर्थी पीयां वदिती ॥
 ॥ ५ ॥ वीर्यु स्मरण सेवस्म
 रणा ॥ नी सुवस वीले जयांचे
 वदना ॥ तो तीर्थ वा सिज्जां
 जा ॥ तीर्थी चरण वदिती ॥ ६
 तोची सकळ तीर्थी चा धात्रा ॥
 तीर्थी वदिती ॥ तो याचा प्रप

दोद कालांगी पवी चाप नीथ
 सा थावोदवीती ॥ ६ ॥ ईदीये
 नेमाचा आसनी ॥ क्षमा ध
 मस सवांगी ॥ आहंकार ज्य
 ची ये रक्षांनी ॥ संच रेना स
 र्वथा ॥ ७ ॥ तीर्थी आसुनी
 इहिराहीला ॥ पतिग्रहान
 धाले हाना ॥ येथा लभे सतो
 शमरीता ॥ तोतीर्थी पाजा
 गावा ॥ ८ ॥ परधनी आधं
 व जयाची यान येना ॥ परत्रि
 पोहता कला ॥ चमना ॥ परा

सांदिबा ॥
 पवादि मुद ॥ ९ ॥ तोज
 नकजांगती थांचा ॥ १० ॥ तीर्थी
 आसुनी इहिराहीतः प
 मन ईद्रियानी ग्रह करी ॥
 तोग्रंहे आसता जा न्हवी
 तीरी ॥ तीर्थी आसुनी
 आनाचा ॥ तोकोटक
 वासी ॥ जाणावा ॥ ११ ॥
 सयासिक द्रुढ वती ॥ आत्म
 वनासंवी भुंती ॥ क्रोध ध
 रिका शांती ॥ तोसर्व तीर्थी
 जासे वीजे ॥ १२ ॥ सुबुद्ध

वे देवाणि व्यानुवादे ॥ १७

हस्तायुगि मुख्यपुत्रक ॥

त्रेतायुगि नीमिशारणाय

पवीत्रादायामाजिक

पुष्टे त्रगंगाश्चैव कळसु

गी ॥ १८ ॥ गंगाजान्हाविरवा

पाहिं हस्ते गंगावेणी जलप्रवा

हिं गंगायाचा चार

नेमी लसे ॥ १९ ॥ हा

हास हस्ते त्रैलोक्य

गी धालुनी लोके तां हलें ॥

पुष्कराचे नीमागशालें ॥

समानतां पावति ॥ २० ॥ दा

हास हस्ते वरुशे वरि ॥ वास

करितां गंगा तीरि ॥ पुष्करा

माजि येकरा त्रिं ॥ वसना लंफ

कपा वीजे ॥ २१ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com